ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 1 | January 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i1.107

भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का प्रदेय

डॉ. नरेश कुमार[1], डॉ. प्रीति सिंह[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष, पंजाबी एवं डोगरी विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

[1]ई.मेल nareshaman2002@hpcu.ac.in

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

[2]ई.मेल drpreetisingh10001@gmail.com

यह शोध आलेख भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद् की विस्तृत शोध परियोजना "गुरु गोबिंद सिंह जी का विद्या दरबार (विद्या दरबार के साहित्य का समाज सभ्याचार अध्ययन) पर आधारित है।

शोध सार-

भारतीय ज्ञान परम्परा सहस्राब्दियों से चली आ रही वह सतत बौद्धिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जिसके मूल में लोक और शास्त्र का अद्वितीय समन्वय रहा है। यह परम्परा केवल ज्ञानार्जन की साधना नहीं, अपितु यह जीवन के समग्र अनुशीलन की प्रक्रिया है। इस दीर्घ यात्रा में विभिन्न युगों में अनेक मनीषियों, संतों, आचार्यों एवं गुरुओं ने अपने विशिष्ट योगदान से इस परम्परा को समृद्ध करने का कार्य किया। उसी प्रकार दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का विद्या दरबार भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनरुत्थान का एक सशक्त केन्द्र बनकर उदित हुआ। गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार की स्थापना केवल एक धार्मिक कार्य नहीं, अपितु यह भारतीय बौद्धिक चेतना को पुनः जागृत करने का प्रयास था। गुरु जी ने उस कालखण्ड में जब ज्ञान के स्रोत विस्मृत हो रहे और धर्म-संस्कार बाह्याचारों में बंधने लगे थे, तब अपने विद्या दरबार के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा की गरिमा को पुनः प्रतिष्ठित किया। यह दरबार ज्ञान का एक ऐसा केंद्र था, जहाँ वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, नीति-साहित्य, योग-दर्शन, न्याय-विचार और भक्ति-आन्दोलन की परम्पराएँ एक साथ संगठित होती थीं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वयं अनेक भाषाओं में काव्य रचना की और अपने दरबारी कवियों को भी ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु प्रेरित किया। संस्कृत, ब्रज, फारसी, पंजाबी, हिंदी और अरबी जैसी भाषाएँ उनके दरबार में ज्ञान-प्रवाह की वाहिका बनकर प्रस्तुत होती थीं। इस प्रकार उनका दरबार एक सांस्कृतिक संगम था, जहाँ भाषाओं, विचारों, परम्पराओं और आध्यात्मिक दृष्टिकोणों में कोई भेद नहीं था, बल्कि समरसता और सह-अस्तित्व की भावना प्रमुख थी। गुरु गोबिंद सिंह जी का विद्या दरबार भारतीय ज्ञान परंपरा के लोकमंगलकारी एवं समावेशी स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। यह भारतीय परंपरा की उस उदारता का प्रतीक है, जो ज्ञान को केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रखती, अपितु उसे जीवन के प्रत्येक क्षण में अनुभूत करती है।

बीज शब्द- गुरु गोबिंद सिंह, विद्या दरबार, भारतीय ज्ञान परम्परा, 52 कवि, विद्याधर

परिचय

भारतीय ज्ञान परम्परा प्राचीन काल से ही अद्वितीय ज्ञान और वैभव की प्रतीक रही है । जिसमें ज्ञान, विज्ञान, कर्म, धर्म तथा त्याग का अद्भुत समन्वय दिखाई पड़ता है । भारतीय ज्ञान परम्परा ऋग्वेद के समय से ही जीवन के समाजिक, नैतिक, भौतिक, अध्यात्म और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती है ।

इसी के साथ मनुष्य के मानसिक और शारीरिक दोनों पहलुओं के विकास में भी सहयोगी है। कहा जाता है कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र की संस्कृति और परम्परा से होता है। उसी प्रकार सभी राष्ट्रों में सृष्टि निर्माण की कथा उनकी परम्परा के अनुकूल होती है और परम्परा के विकास के साथ ही मनुष्य का विकास भी होता है। भारतीय ज्ञान परम्परा स्वयं में समृद्ध मानी जाती है। इसमें चार हजार साल पूर्व का इतिहास और ज्ञान भारतीय परम्परा की धरोहर मानी जा सकती है। भारतीय ज्ञान परम्परा की अनेक विशेषताएं हैं जो अन्य प्राचीन परम्पराओं से भिन्न है। इसमें सृष्टि के निर्माण से लेकर मनुष्य के विकास का स्वरूप अद्वितीय है। भारत की संस्कृति और ज्ञान का आरम्भ सिन्धु घाटी सभ्यता से माना जा सकता है जहाँ से मनुष्य के विकास का इतिहास जुड़ा है। इसी भारत की संस्कृति और ज्ञान को उच्च कोटि का बनाने के लिए या उसे संजोकर रखने का प्रयास गुरु गोबिंद सिंह और उनके दरबार के बावन चिंतकों द्वारा किया गया। गुरु गोबिंद सिंह दस गुरु परम्परा के दसवें गुरु माने जाते हैं। वह वीर योद्धा और संत होने के साथ-साथ महान कवि भी थे। इनकी अनेक रचनाएँ भारतीय ज्ञान को समृद्ध बनाने का कार्य करती है। अनेक रचनाएँ भारतीय पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर लिखी गई हैं। जिनमें भारतीय संस्कृति की झलक पूर्ण रूप से परिलक्षित होती है। इसी क्रम में इनके बावन चिंतकों का योगदान भी महत्वपूर्ण है, जिन्होंने गुरु दरबार में रहकर भारतीय ज्ञान का विस्तार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। गुरु गोबिंद सिंह का दरबार आनंदपुर और पांवटा में स्थित था। जहाँ अनेक कवि गुरु गोबिंद सिंह के आश्रय में रहते थे। गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में ज्ञान के अनेक साधन उपलब्ध थे जिस कारण इन कवियों ने अनेक विषयों में अपनी रचनाएँ की। कवियों ने भी पौराणिक कथाओं को आधार बनाया और भारतीय संस्कृति और ज्ञान का प्रसार करने का कार्य किया। गुरु गोबिंद सिंह के कवि दरबार की विरासत भारतीय संस्कृति और ज्ञान को समृद्ध बनाने का कार्य करती है।

भारतीय परम्परा और संस्कृति बहुत प्राचीन एवं समृद्ध है। हजारों वर्षों का इतिहास हमारी संस्कृति और ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत में अनेक महापुरुषों ने देश की संस्कृति और ज्ञान को परिरक्षित करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरु गोबिंद सिंह का नाम उनमें अग्रिणी है। गुरु गोबिंद सिंह विविध प्रतिभाओं से संपन्न युगपुरुष थे। उन्होने तत्कालीन समाज को भोग विलास से परे अध्यात्म का ज्ञान देने का कार्य किया। उनके द्वारा स्थापित कवि दरबार उस समय का मुख्य ज्ञान केंद्र था। जहाँ अनेक स्थानों से आये कवियों ने विभिन्न भाषाओं को आधार बनाकर अपने साहित्य का सृजन किया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वयं भी अपनी रचनाओं में पौराणिक कथाओं को आधार बनाया और अपने कवियों को भी अनेक प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद तथा लिपियंतरण करने का कार्य दिया। उन कवियों ने महाभारत के अनेक पर्वों का अनुवाद किया ताकि जनमानस उसे पढ़ने और समझने में सक्षम हो सके। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे वेदों,उपनिषदों में ज्ञान और अध्यातम के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि पूरा विश्व और समाज के लोग एक परिवार हैं। 'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम ॥[1] भारतीय संस्कृति और परम्परा का वैशिष्टय इसके माध्यम से देखा जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

भारत एक देश नहीं अपितु ज्ञान, आदर्श और संस्कार की कर्मभूमि है। प्राचीन समय से ही यहाँ की संस्कृति और ज्ञान की परम्परा बहुत समृद्ध रही है। यहाँ अनेक ऋषि मुनियों ने अपने ज्ञान कौशल से वेदों, उपनिषदों, पुराणों और धर्मग्रथों को परम्परागत रूप से आज तक जीवित रखा है। भारतीय ज्ञान परम्परा के यह महत्वपूर्ण अंग माने जा सकते हैं। यह परम्परा अक्षुण्ण है, क्योंकि इस परम्परा पर प्राचीन समय से अनेक आघात हुए परन्तु यह आज भी उसी रूप में स्थापित है। आदिम समय से ही भारत के ऋषि मुनियों से समग्र संसार ज्ञान, विज्ञान की शिक्षा लेता आ रहा है जिसका वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण स्थान है।

आदिकाल से ही भारत ज्ञान का केंद्र रहा है। यहाँ अनेक शिक्षा केन्द्रों ने भारतीय ज्ञान परम्परा का विस्तार करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा के लिए गुरुकुल, विहार और विश्वविद्यालयों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुरुकुलों में छात्र को अध्यात्म के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा भी दी जाती थी। उन्हें वेदों, पुराणों आदि का भी ज्ञान दिया जाता था और मनन भी करवाया जाता था। जिससे छात्रों को उन्हें कंठस्त करने में सहायता मिलती थी। यहाँ ज्ञान के लिए उपनिषद, वेद, पुराण

आदि प्रमुख स्तंभ थे। प्राचीन भारत में दर्शन, ध्वन्यात्मक भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष और संगीत जैसे अनेक विषयों ने ज्ञान के क्षेत्र में और मानव उन्नति में अपना अत्यधिक योगदान दिया। ज्ञान और शोध के लिए अनेक विश्वविद्यालयों को स्थापित किया गया था। इन विश्विद्यालयों में नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी, ओदंतपुरी, मिथिला, उज्जैनी, काशी आदि का नाम प्रमुख है। इन विश्वविद्यालयों को ज्ञान का केंद्र माना जाता था। भारत की ज्ञान परम्परा भारत के अतिरिक्त पश्चिम के कई देशों में प्रचलित थी। यहाँ अन्य देशों के छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते था। जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत की ज्ञान पद्धति बहुत सम्पन्न थी। भारतीय ज्ञान पद्धति में हमारी संस्कृति, कला, भाषा और परम्पराओं का ज्ञान छात्रों में सकारात्मक उर्जा और आत्मसम्मान का निर्माण करने में सहायक थी। भारत में आरम्भ से ही स्त्री शिक्षा पर जोर दिया गया था। शोध और ज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इनमें गार्गी, अपाला, लोपामुद्रा, मैत्रीयी आदि का नाम प्रमुख है। जिन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी के साथ आर्यभट्ट, बोधायन, कात्यायन, चरक, भर्तृहरी, शंकराचार्य, विवेकानंद आदि अनेक महापुरुषों ने भारत भूमि में जन्म लेकर भारतीय संस्कृति और भारतीय ज्ञान परम्परा की समृद्धि हेतु अपना अतुल्य योगदान दिया। जैसा कहा गया है कि गुरुकुल शिक्षा के आधार स्तंभ थे। छात्र अठारह शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त करते थे जिसमें चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद),छः वेदांग, चार उपवेद (आयुर्वेद, शिल्पवेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद), मीमांसा, धर्मशास्त्र, पुराण तथा न्याय शामिल थे। इस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि को समाहित कर मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना था। छात्र वैदिक ऋचाओं का पाठ करते थे। मंत्रोच्चारण को ललित कला के रूप में विकसित किया गया था ताकि छात्र उसे कंठस्त करने में सक्षम हो सकें। गुरु के मुख से निकले शब्दों को पुर्णतः वैदिक माना जाता था। साथ ही इस शिक्षा ने मनुष्य को लौकिक और परालौकिक समस्याओं को जानने और उसका समाधान निकलने तक की जानकारी दी। भारतीय ज्ञान परम्परा मनुष्य को व्यवहारिक ज्ञान पर भी जोर देती थी। छात्रों को घर के कार्यों से लेकर उनके व्यवहार को भी विकसित किया जाता था। साथ ही मनुष्य को व्यक्तिगत जीवन से लेकर समाज के हर पहलु पर समग्र चिंतन करने पर जोर देती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत की ज्ञान परम्परा ने उच्चतर ज्ञान का प्रसार कर श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त मानव जीवन का निर्माण किया। वेदों में व्यक्ति से व्यक्तित्व के निर्माण की जो परम्परा रही है, वह भारतीय वेदों से पूर्व से उपस्थित है। "संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्, देवा भागं यथा पूर्वे, सञ्जानाना उपासते"[2] साथ चलने एक स्वर में बोलने और एक दुसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है।

गुरु गोबिंद सिंह दस गुरु परम्परा के दसवें गुरु माने जाते हैं। उन्हें प्रबल साहस और वीरता का प्रतीक माना जाता है। गुरु गोबिंद सिंह महान व्यक्तित्व के धनी होने के साथ-साथ संत तथा कवि भी थे। जिस कारण यह कहना सार्थक होगा कि वह विविध प्रतिभा से सम्पन्न युगपुरुष थे। उनका "जन्म पटना नामक स्थान में हुआ। जिसका वर्णन करते हुए वह लिखते हैं-

"मुर पित पूरब कियसी पयाना। भांति भांति के तीरथ नाना।
जब ही जात त्रिवेणी भये। पुन्न दान दिन करत बितये।
तहीं प्रकाश हमारा भयो। पटना शहर बिखै भव लयो।"[3]

जिस समय गुरु गोबिंद सिंह का जन्म हुआ उस समय गुरु तेग बहादुर बंगाल की यात्रा पर थे। उन्हीं के वचनानुसार उनका नाम गोबिंद राय रखा गया था। गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रारम्भ पांच वर्ष पटना में ही व्यतीत किये और वहीं से ही आरंभिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद गुरु गोबिंद सिंह आन्दपुर लौट आये यहाँ आकर उन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा ग्रहण की। जिसमें उन्होंने शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान ग्रहण किया। उसके पश्चात् गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के बाद 11 नबम्बर 1675 को नौ वर्ष की आयु में गुरु गोबिंद सिंह गुरु गद्दी पर विराजमान हुए और सिक्खों के दसवें गुरु बने। मुग़ल शासन काल में अत्याचार अपने चरमोत्कर्ष पर था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इसका विरोध किया। उन्होंने समाज को भक्ति के मार्ग पर ले जाने के लिए 'निर्मला पंथ' की स्थापना की। गुरु गोबिंद सिंह जी ने 1686 ई. में पांच सिक्खों को संस्कृत और शास्त्रीय हिन्दू साहित्य को सिखने के लिए वाराणसी भेजा था। जहाँ

उन्होंने शास्त्रों का ज्ञान लेकर उन्हें सामान्य जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया। वह इन धर्म ग्रंथों का सरल भाषा में अनुवाद करते थे। उन्होंने वेदांत, योग, उपनिषद, भातीय दर्शन और धर्मशास्त्र की शिक्षा को बढ़ावा दिया, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के मुख्य आधार माने जाते हैं और जनता को भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल तत्वों के प्रति जागरूक करती थी। वह भारतीय ग्रंथों के विवादस्पद विषयों पर विमर्श और व्याख्यान भी किया करते थे, जो सामान्य जन मानस को विचारशीलता और ज्ञान की प्राप्ति में सहायक थे। इसके साथ धर्म की रक्षा हेतु उन्होंने 1699 ई. में 'खालसा पंथ' की स्थापना की। जो सिक्ख धर्म में ऐतिहासिक दिन के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने 'पंज प्यारों' से अमृत छक कर गोबिंद राय से अपना नाम गोबिंद सिंह रख लिया। पंज प्यारों को गुरु का दर्जा देकर स्वयं उनके शिष्य बन गए। उन्होंने सामाजिक रुढियों को समाप्त कर समानता स्थापित की और लोगों में आत्मसम्मान की भावना जागृत की। उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक युद्ध लड़े जिसमें नादौन, भंगाणी और चमकौर शामिल है। उनके चार साहिबजादे जिनमें से दो बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह ने चमकौर के युद्ध में शहादत प्राप्त की थी। और छोटे शाहिबजादों में बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह जिन्हें सरहंद के नवाब वजीर खां ने जिन्दा दीवारों में चिनवा दिया था। युद्ध की दृष्टि से गुरु गोबिंद सिंह जी ने केसगढ़, फतेहगढ़, आनंदगढ़ और लोहागढ़ के किले बनवाए थे। इसके साथ ही गुरु गोबिंद सिंह जी ने धर्म, संस्कृति और देश की शान के लिए पूरे परिवार को कुर्बान कर दिया। परिवार की कुर्बानी के पश्चात् उन्होंने नांदेड में 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को गुरु दर्जा देते हुए और इस कार्य का श्रेय अकाल पुरुष को देते हुए लिखते हैं –

"आज्ञा भई अकाल की तभी चलाइयो पंथ,
सब सिक्खन को हुक्म है गुरु मान्यो ग्रन्थ,
गुरु ग्रन्थ जी मानिओं प्रगट गुरां की देहु,
जो प्रभु को मिलवे चहे, खोज शब्द में लेहु।[4]

इसके पश्चात् कोई भी देहधारी व्यक्ति गुरु पद पर नहीं बैठा। जिस कारण 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को ही गुरु माना जाने लगा। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपना सारा जीवन मुगलों के अत्याचारों से सामान्य जनमानस को बचाने में लगा दिया। उन्होंने सदैव प्रेम, एकता और भाईचारे का सन्देश दिया। सत्य की राह पर चलते हुए 7 अक्टूबर 1708 ई. को वह महाराष्ट्र के नादेड में ज्योति-जोत समा गए।

गुरु गोबिंद सिंह द्वारा स्थापित कवि दरबार तत्कालीन समय का प्रसिद्ध दरबार था। उनका दरबार आनंदपुर और पांवटा में स्थित था। उनके दरबार में बावन चिंतकों के होने का प्रमाण मिलता है। यह सख्यां विद्वानों के मतानुसार घटती-बढती रहती है। परन्तु सर्वमत से इनके दरबार में 52 कवियों के होने का ही प्रमाण मिलता है। "गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में 52 कवियों का होना प्रसिद्ध है, इन सभी कवियों का परिचय और कृतियाँ तो आज उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु जो कुछ प्राप्त है उससे इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है की गुरु गोबिंद सिंह ने अपने चारों ओर साहित्यिक वातावरण का निर्माण किया था।"[5] इन चिंतकों को गुरु गोबिंद सिंह अपने अनुभव और तर्क की कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही अपने दरबार तथा काव्य का अंग बनाते थे। गुरु गोबिंद सिंह से पूर्व के गुरुओं के काल में भी विद्या दरबार स्थापित थे। प्रथम गुरु गुरु नानक देव से लेकर गुरु अर्जुनदेव तक विद्या दरबार थे। इस कारण यह कह पाना सार्थक नहीं है कि विद्या दरबार की परम्परा गुरु गोबिंद सिंह के समय से प्रचलित है। पूर्व के गुरुओं के दरबार में साधु-संत, भक्तों और शिष्यों को दरबारों में आश्रय प्राप्त था। इस बात का अनुमान 'आदि ग्रन्थ' से लगाया जा सकता है क्योंकि उसमें गुरुओं की वाणी के साथ साथ संतों की वाणी भी शामिल है। गुरु अर्जुनदेव जी के बाद गुरुओं द्वारा कवियों के दरबार को महत्व दिया जाने लगा। जिस कारण कहा जा सकता है कि गुरु गोबिंद सिंह जी के पूर्व भी कवि दरबार प्रचलन में थे। गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में सुदूर तथा स्थानीय कवि दोनों सम्मिलित थे। यह कवि गुरु गोबिंद सिंह से अध्यात्मिक ज्ञान लेने आया करते थे। इन कवियों में अणिराय, सेनापति, कुबेरेश, मंगल, हीर आदि के नाम उल्लेखनीय है। गुरु गोबिंद सिंह का रचना काल

1682 ई. के आसपास का रहा है जिस कारण कहा जा सकता है कि उनके दरबारी कवियों का रचनाकाल भी यही रहा होगा। उनकी रचना के आधार पर कहा जा सकता है कि सभी कवि इक समय पर न होकर आते-जाते रहे होंगे।

गुरु गोबिंद सिंह जी का तत्कालीन समय मुगलों का समय था। उस समय मुगलों के अत्याचार से सामान्य जनमानस अत्यंत क्षुब्ध थी। मुगलों द्वारा हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा था। जिस कारण हिन्दू जनता अपने लिए आश्रय खोजने लगी। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने दरबार में उद्धिग्न जनता को आश्रय देने का कार्य किया। तत्कालीन समय में जो हिन्दू कवि दरबारों में आश्रित थे उनके धर्म परिवर्तन न करने पर उन्हें दरबारों से निराश्रित कर दिया गया। जिस कारण उनका अन्य दरबारों की और पलायन आरम्भ हो गया। "श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या-दरबार में कवि और अन्य गुणीजन इसलिए आते थे क्योंकि उन्हें अन्य राज-दरबार के मुकाबले अधिक इज्जत मान मिलता था।"[6] इस कारण अधिकांश कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में आश्रय ग्रहण किया। गुरु गोबिंद सिंह के दरबार को मुख्यतः आन्दपुर दरबार कहा जाता था। यहाँ किसी प्रकार के भेदभाव न कर कवियों को आश्रय दिया गया। तत्कालीन राज-दरबार श्रृंगारिकता और भोग विलास में अपना समय व्यतीत करते थे। उन राज-दरबारों के कवि अपने राजा को प्रसन्न करने के लिए उनका झूठा यशोगान किया करते थे। अधिकतर कवि उन्हें संतुष्ट करने के लिए रचनाएँ करते थे और उपहार में धन ग्रहण करते थे। इन परिस्थितियों को देखते हुए गुरु गोबिंद सिंह जी ने जनता का ध्यान भक्ति की ओर केन्द्रित किया किया। भक्ति का प्रसार करने के लिए उनके विद्या दरबार ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके 52 चिंतकों ने गुरु साहिब के दरबार में रहकर अनेक विषयों पर रचनाएँ की। उन्होंने अपनी रचनाओं का आधार गुरु गोबिंद सिंह को बनाया। यह कवि अनेक विषयों और भाषाओँ के ज्ञाता थे, जिस कारण अनेक विषयों पर सुन्दर काव्य- रचना किया करते थे। रचना पूर्ण होने के पश्चात् गुरु गोबिंद सिंह कवियों को उपहार आदि दिया करते थे। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में वीर रस की भावना को जागृत करने का कार्य करते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उनका दरबार साहित्यिक वातावरण से ओत-प्रोत था। सभी कवियों की रचना को संकलित कर उसे 'विद्याधर' या 'विद्यासागर' का नाम दिया गया। कहा जाता है कि इस ग्रथ का भार नौ मन था परन्तु मुगलों के आक्रमणों के कारण अधिकांश भाग नष्ट हो गया था।

गुरु गोबिंद सिंह के सभी दरबारी कवियों की रचनाएँ और जीवनवृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। कवियों की रचनाओं का कुछ भाग ही उपलब्ध हो पाया है। उन कवियों की संख्या में भी विद्वानों में मतभेद रहते है। "इन कवियों की एक सूची संतोष सिंह जी की पुस्तक 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ' में संकलित है। जो कि इस निम्नलिखित रूप से है- "उदयराम, अणीराय, अमृतराय, अल्लू, आसासिंह, आलम, ईश्वरदास, सुखदेव, सुखासिंह, सुदामा, सेनापति, श्याम, हीर, हुसैनअली, हंसराम, कल्लू, कुवरेश, खानचंद, गुणिया, गुरुदास, गोपाल, चंदन, चंदा, जमाल, टहकन, धर्म सिंह, धन्नासिंह, ध्यानसिंह, नानू, निश्चलदास, निहालचंद, नंदराम अथवा नंदसिंह, नन्दलाल, पिंडीदास, वल्लभ, बल्लू, विधिचंद, बुलंद, वृष, बृजलाल मथुरा, मदनसिंह, मदनगिरी, भल्लू, मल्लू, मालासिंह, मंगल, राम, रावल, रोशनसिंह, लक्खण राय"[7]

सर्वमत से जिनका उनके दरबार में होना माना जाता है, उनकी सूचि निम्नलिखित रूप से है- अणीराय, अमृतराय, आलम, ईश्वरदास, सुखदेव, सुदामा, सेनापति, हीर, हुसैन अली, हंसराम, कुबरेश, गुरुदास, गोपाल, चन्दन, चंद, टहकन, धर्मसिंह, धन्ना सिंह, ध्यानसिंह, नन्दसिंह, बृजलाल, मल्लू, मंगल, लक्खण, रामचंद्र, सुन्दर, शारदा, काशीराम, नानू, सैना, आसा सिंह, सुकवि, भूपति। कवियों के विशिष्ठ साहित्य के आधार पर माना जा सकता है कि यहाँ उच्च कोटि के कवि विद्यमान थे। इन कवियों की अधिकांश रचनाएँ गुरु गोबिंद सिंह का यशोगान करती हुई दिखाई पड़ती हैं। इन रचनाओं में गुरु गोबिंद सिंह के जीवन, युद्धों के साथ-साथ अनेक विषय शामिल थे। गुरु गोबिंद सिंह के कवियों में चंद कवि गुरु गोबिंद सिंह जी के व्यक्तित्व और उनके दरबार का वर्णन करते हुए लिखता है-

"कलि में भयो एक मरद नानक है, नाम जाको'
ता ते भये नौ एक ज्योति सुहायो है।
खडगधारी होय महल दसवाँ कहायो है,
तेईयन मैं आए बीच पैठे समाए गुरु

दुनिया बसाये जाए पांवटाप बसायो है।
सत्य गुरु बचन सार मरद गुरु का विचार ,
गोबिंद सिंह कृपा ते दास चंद कहि सुनायो है।[8]

गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवि विविध प्रतिभा से सम्पन्न थे। उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह के दरबार को प्रतिष्ठित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके एक कवि ने गुरु गोबिंद सिंह के कवियों को सुजान कह कर संबोधित किया।

"गुरु गोबिंद की सभा महि, लेखक परम सुजान"[9]

उनकी रचनाएँ अनेक विषयों को आधार बनाकर लिखी गयी थी। जो इस बात का प्रमाण है कि गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में विद्या के अनेक साधन उपलब्ध थे। उनकी रचनाएँ ग्रन्थ तथा फुटकर रूप में उपलब्ध होती है। अधिकांश रचनाएँ आज उपलब्ध नहीं है परन्तु जितनी रचनाएँ आज के समय में प्राप्त होती है वह साहित्य की दृष्टि से उच्च कोटि की मानी जा सकती हैं। "गुरु गोबिंद सिंह जहाँ स्वयं कलम के धनी थे, वहां उन्होंने सैंकड़ों कलमों को इस तरफ लाकर लोक-जागृति के कार्य को सरल और शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया।[10]

भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार और दरबारी कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसा कहा गया है कि उनके दरबार में विद्या के अनेक साधन उपलब्ध थे इसी कारण वहां भारतीय पौराणिक ग्रंथों का भाषा रूपांतरण और लिपियंतरण बड़े ही सरल और सहज रूप में किया गया। गुरु गोबिंद सिंह ने जिस साहित्यिक वातावरण का आरम्भ किया था, उसमें प्रबंध और मौलिक और भाषा-रूपांतरित सभी प्रकार की रचनाओं का आरम्भ हुआ। परन्तु भारतीय ज्ञान परम्परा के उद्देश्य से भाषा-रूपांतरित रचनाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दरबारी कवि अनेक भाषाओँ के ज्ञाता थे। उन्हें फ़ारसी, संस्कृत और पंजाबी भाषा का अथाह ज्ञान था, जिस कारण इन ग्रंथों का अनुवाद बड़े व्यवस्थित रूप में किया गया। स्वयं गुरु गोबिंद सिंह जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, उन्होंने पंजाबी, ब्रज, फारसी और संस्कृत भाषा में महारत हासिल की थी। "भाषा और वाद्ययंत्रों पर आप जी की कमाल की पकड़ थी। गुरु जी पंजाबी, हिंदी, फारसी, अरबी, संस्कृत के महान विद्वान थे, यहाँ तक भाषा के मिलाप से नई से नई शब्दावली को जन्म दे देते थे। आप जी ताऊस का बहुत सुन्दर वादन करते थे। पौंवटा साहिब स्थान में आप जी ने बेअंत साहित्य की रचना की और करवाई।"[11] उनका साहित्य अध्यात्मिक दृष्टि से उच्च कोटि का साहित्य था। उनकी रचनाएँ 'दशम ग्रन्थ' में संकलित हैं। "श्री दशम ग्रन्थ साहिब' की रचनाएँ भक्ति,संस्कृति का एक ऐसा सुन्दर गुलदस्ता है, जो साहित्यिक दृष्टि से, धार्मिक पक्ष और राजनितिक पक्ष के ऐसे तथ्यों को उभरता है जो भारतीय सभ्याचार का कोश बन जाता है।[12] (पंजाबी दुनिया,पृष्ठ 249) उन्होंने चौबीस अवतार रचना में पौराणिक देवताओं के विषय को आधार बनाया। उन्होंने उसमें कृष्णावतार, रामावतार, रुद्रावतार आदि के अवतारों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया।

"इन महि स्रिसटि सु दस अवतारा
जिन महि रमिया राम हमारा
अनत चतुदस गन अवतारु
कहो जु तिन तिन किए अखारु"[13]

इस तरह भारतीय देवी देवताओं के अवतारों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया। इन्होनें अपने कवियों द्वारा भी कई रचनाओं को आधार बनाकर भारतीय ज्ञान परम्परा को बढ़ावा देने का कार्य किया। गुरु गोबिंद सिंह जी को वेदों पुराणों आदि का भी ज्ञान था। उन्होंने अपनी कृति 'जापु' में वेदों में कथित ब्रह्म स्वरूप का अनुसरण कर ब्रह्म का सुन्दर रूप प्रस्तुत किया है।

"चक्र चिन्ह अरु बरन जात अरु पात नहिन जिह
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहिं न सकति किह
अचल मूरति अनुभउ प्रकास अभिजोत कहिज्जै
कोटि इंद्र इन्द्राणी साहि साहाणि गणिज्जै
त्रिभुवन महीप सूर नर असुर नेत-नेत बन त्रिण कहत,
तब सरब नाम कत्थै कवन करम नाम बरणत सुमत।[14]

इसी प्रकार 'विद्याधर' में अनेक रचनाएँ भारतीय ज्ञान परम्परा का स्तंभ मानी जा सकती है। "इस ग्रन्थ में भारतीय दर्शन, पुराण और इतिहास के महान पंडितों का भाषानुवाद संकलित है।"[15] तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल 'महाभारत' को सर्वाधिक महत्त्व दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इन कवियों से महाभारत के कई पर्वों का भाषानुवाद करवाया। कवियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा की पुनरोत्थान की नींव स्थापित करने का कार्य
किया। इन भाषारुपंतरण के लिए गुरु गोबिंद सिंह उन्हें उपहार भी दिया करते थे। जिससे यह पता चलता है कि उनके दरबार में कवियों का बहुत सम्मान किया जाता था।
"गुरु गोबिंद सिंह को केवल विद्या का शौंक नहीं था, विद्वानों का सम्मान करने का भी बहुत शौंक था।[16] उनके कवियों में अमृतराय ने महाभारत के सभा पर्व का भाषारूपांतरण किया। यह भाषा रूपांतरण 81 अध्यायों में वर्णित है। उन्होंने भाषा रूपांतरण को बड़े सुन्दर एवं सहज रूप से प्रस्तुत किया।

पुरा देव युगे तात विवस्वान् भगवान दिवः।
आगच्छन्मानुषं लोकं दिदृक्षुर्विगतक्लमः ॥२॥

अमृतराय ने इन पक्तियों को सवैया छंद में निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया है-

एक दिन रवि नाक तै आवत, मानवलोक निहारनि को।
षेदु नहीं तिहको कबहूं संकल्प विकल्प प्रहारनि को।
तिह आवत ही कमलासन की सुभ देषी सभा जिय धारन को।
कब कौन कहे जु यह उपमानहि सेस सहस्स उचारन को।[17]

(भूषण,भारत,(प्रथम संस्करण-1976),गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि-277)

इस प्रकार महाभारत के लिपियंतरण करने से भाषा को समझना और भी सरल हो गया था। सामान्य जनमानस को इन ग्रंथों का अध्ययन करना अत्यंत सरल हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन साहित्य की प्रत्येक प्रकार की बहुमूल्य निधियों को जनमानस तक पहुँचाने का एक महान प्रयास किया जा रहा था। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों, पुराणों, शास्त्रों और अपने धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक माना गया। "आनंदपुर में उनका दरबार एक साहित्यिक केंद्र बन चूका था। उनके दरबार 52 कवि जी धार्मिक रचनाओं के साथ-साथ पुराणों, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों से भारत के दरबारी कवियों की कहानियों का अनुवाद करते थे। ऐसी रचनाएँ करवाने का उनका उद्देश्य अपने श्रद्धालुओं में नई भावना पैदा करना और अत्याचार, अन्याय का डटकर सामना करना था।[18] जिस कारण प्राचीन ज्ञान पद्धति में छात्रों को इन सब विषयों का पूर्ण रूप से ज्ञान दिया जाता और साथ ही गुरु द्वारा उन्हें कंठस्त करवाया जाता था। भारतीय पौराणिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे गए है जिस कारण उन्हें समझ पाना अत्यंत कठिन हो जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इन पौराणिक ग्रंथों का भाषाई रूप से अनुवाद करवाया जिसने भारतीय ज्ञान परम्परा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इसी क्रम में अपने दरबारी कवि कुबेरेश द्वारा 'द्रोण पर्व' का अनुवाद करवाया। उन्होंने श्लोकानुसार ही भाषा रूपांतरण किया।

महाभारत-
माधवस्तु रणे राजन् कुरुराजस्य धन्विनः
धनुश्चिच्छेद समरे क्षुरप्रेण हसन्निव ॥
महाभारत भाषा-
बान एक धुरका सम मार।
धनक सातुकी कियो प्रहार।[19]

इसके अतिरिक्त 'हंसराम' कवि ने 'कर्ण पर्व' का भाषानुवाद किया। इसमें उन्होंने संस्कृत भाषा के कठिन शब्दों का सरल भाषा में अनुवाद किया।

(महाभारत)

धृतराष्ट्र उवाच -

सैनापत्यं तु सम्प्राप्य कर्णो वैकर्तनस्तदा।
तथोक्तश्च स्वयं राज्ञा स्निग्धं भ्रातृसमं वचः
योगमाज्ञाप्य सेनानामादित्येऽभ्युदिते तदा।
अकरोत् किं महाप्राज्ञस्तन्ममाचक्ष्व संजय।

(महाभारत भाषा)

धृतराष्ट्र उचाव-

सैनापत हुय सूनु सुत, कहा कहे मुख बोल।
प्रात समै सब जुध को जोधा चले अडोल
तीन जुध के सोभया, सो संजय कहु बात।
जाते मेरे चित्त के, मिटै सबै उत्तपात ॥२॥[20]

'टहकन' को गुरु गोबिंद सिंह द्वारा 'अश्वमेध पर्व' का भाषा रूपांतरण करने का कार्य सौंपा गया था। इन भाषा रूपान्तर में भारतीय पौराणिक देवी-देवताओं की स्तुति शामिल की गयी। इसके साथ उन्होंने भगवान कृष्ण के स्वरूप का भी चित्रण किया। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का श्रेय कृष्ण को देते हुए लिखा-

अश्वमेध कीत वीरवर किसन चंद किय आपि,
सुजसु जुधिष्ठिर को दियो, कीनो भगत प्रतापि। 1)
जग्ग जुधिष्ठिर सफल भये तबि।
साबधान ठाढ़े गिरिधारि जबि। 2)[21]

'मंगल' कवि भी गुरु गोबिंद सिंह के दरबार के महान कवि थे। जिन्होंने गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में रहकर अनेक रचनाएँ की। भारतीय ज्ञान परम्परा की दृष्टि से देखा जाए तो उन्होंने पौराणिक ग्रंथों का भाषानुवाद किया। जो सस्कृति और ज्ञान के सरंक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने महाभारत के 'शल्य पर्व' का अनुवाद किया।

महाभारत

संजय उवाच -

पीडिते धर्मराजे तु मद्रराजेन मारीष।
सात्यकिर्भिमसेनश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ
परिवार्यः रथै शल्यं पीडयामासुराहवे।
तमेकं बहुभिदृष्टवा पीड्यमानं महारथैः ॥
साधुवादो महांजज्ञ सिद्धाश्चासन् प्रहर्षिताः।
आश्चर्यमित्यभाषन्त मुनयश्चापि संगताः ॥

महाभारत भाषा-

कवित्त

संजय उवाच-

मद्रराज भी उत कियो है धरम राज जब।
भीम अरु सातक सहाय ही को आय हैं।
माद्री के सुत न चेरो समर मैं सत्व आन,
सर बरषा को कर पीडत कराय है।
एक सल्य पर आन परे हैं बहुत सूर,
इस्थित अकास विच सिंह मुसकाय है।
धन्य-धन्य यह बड़ो शब्द करत भय मान्यो,
रिषभ अचरज कौतुक दिखाए है।[22]

इन रचनाओं का भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में अपनी अलग छवि दिखाई देती है। यह ग्रन्थ भारतीय ज्ञान परम्परा की धरोहर मानी जाते हैं। इस क्रम में 'सेनापति' ने 'चाणक्य नीति' का संस्कृत भाषा से पंजाबी भाषा में अनुवाद किया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें इस कार्य को सौंपा था।

"गुरु गोविंद की सभा महिं लेखक परम सुजान।
चणाकै भाषा करी कवि सेनापति नाम।"[23](भूषण,1976 पृष्ठ 107)

'चाणक्य नीति' का सरल भाषा में अनुवाद करने का कार्य किया ताकि तत्कालीन समाज चाणक्य नीति की महत्ता को समझ सके। साथ ही उसमें वर्णित विषयों को समझने में सक्षम हो सके। जीवन जीने के मूल्यों का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

मूल चाणक्यनीति -
स्त्रीणां द्विगुण आहारो लज्जा चैव चतुर्गुणा।
षडगुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृतः।
चाणक्यनीति भाषा-
पुरखन दे दुगणी छुधा, सहिसा छै गुणी नारि।
बुद्धि चौगुणी नारि में, काम चारि अर चारि।[24]

गुरु गोबिंद सिंह के अन्य कवियों में 'कुबरेश' नामक कवि ने भी भारतीय पौराणिक ग्रंथों के अनुवाद में अपनी महत्वपूर्ण भमिका निभाई। उन्होंने महाभारत के 'द्रोण पर्व' का भाषानुवाद किया। इस ग्रन्थ का आरम्भ भी उन्होंने पौराणिक देवी-देवताओं की स्तुति से किया। इसके पश्चात् रण भूमि का वर्णन दिखाई पड़ता है।

महाभारत
माधवस्तु रणे राजन् कुरुराजस्य धन्विनः।
धनुश्चिच्छेद समरे क्षुरप्रेण हसन्निव॥
महाभारत भाषा
बान एक हुरका सम मार।
धनक सातुकी कियो प्रहार॥[25]

निष्कर्ष

साहित्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करता है। साहित्य के कारण मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। उस साहित्य निर्माण में कवि एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु गोबिंद सिंह का महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके दरबारी कवियों ने भारतीय सभ्यता और ज्ञान का विस्तार करने का कार्य किया। कवियों में अपने साहित्य सृजन से भारतीय ज्ञान को विस्तृत किया। उन्होंने अपनी रचनाओं से तत्कालीन समाज और परिस्थितियों को साहित्य के रूप में प्रस्तुत किया। गुरु गोबिंद सिंह और उनके बावन कवियों ने भारतीय ज्ञान परम्परा में अनेक विषयों को आधार बनाकर रचनाएँ की। गुरु गोबिंद सिंह का दरबार ज्ञान और संस्कृति का प्रमुख केंद्र था। इन्होनें उस समय की परिस्थितियों के अनुसार साहित्य सृजन किया। मुगलों के अत्याचारों से दुखी सामान्य जनमानस को भक्ति का मार्ग दिखाने का कार्य किया। उनके विद्यादरबार में ज्ञान के अनेक साधन होने के कारण कवियों ने भारत की संस्कृति को उजागर करने का कार्य किया। उनके द्वारा किये गए भाषानुवाद भारतीय ज्ञान को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने महाभारत के जितने भी भी पर्वों का अनुवाद किया वह सरल भाषा में होने के कारण लोगों में भक्ति और वीरता का रस भरने का कार्य करती थी। उस समय जनता मुगलों के दमन के कारण भक्ति के मार्ग से हटकर उनकी यातनाएं सहन कर रही थी। इस दृष्टिकोण से उनकी रचनाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके द्वारा किये गए भाषानुवाद ने महाभारत के ज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया। गुरु गोबिंद सिंह और उनके द्वारा स्थापित विद्या दरबार ने भारत के गौरव को प्रतिष्ठित करने का कार्य करता है।

सन्दर्भ सूची

[1]. महोपनिषद्, अध्याय 4, श्लोक 71
[2]. ऋग्वेद, 10.191.2
[3]. सिंह, महीप(2002), भारतीय साहित्य के निर्माता:गुरु गोबिंद सिंह, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृष्ठ - 21
[4]. सैनी, धर्मपाल, (2011),गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में भारतीय संस्कृति,नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, पृष्ठ-35
[5]. सिंह,महीप,(1969), गुरु गोबिंद सिंह जी और उनकी हिंदी कविता, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग.पृष्ठ-349
[6]. पंजाबी दुनिया (जनवरी-अप्रैल-2017), पंजाब: भाषा-विभाग, पृष्ठ-154
[7]. सिंह, संतोख, ,(2011), श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ,पंजाब: भाषा विभाग, पृष्ठ -5569
[8]. सिंह,वीर, (2023) कलगीधर चमत्कार, नई दिल्ली: भाई वीर सिंह साहित्य सदन, पृष्ठ- 457
[9]. सिंह,महीप, (1969) गुरु गोबिंद सिंह जी और उनकी हिंदी कविता, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग.पृष्ठ-349
[10]. पदम् , पियारा सिंह, , (2019) गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी रत्न, अमृतसर: सिंह ब्रदर्स, पृष्ठ- 33
[11]. सिंह, सरबजीत, (2014),श्री गुरु गोबिंद सिंह,पटियाला: पंजाबी यूनिवर्सिटी ,पृष्ठ-4
[12]. पंजाबी दुनिया (जनवरी-अप्रैल-2017), पंजाब: भाषा-विभाग, पृष्ठ-249
[13]. सिंह,जोध,(1990) श्रीदसमग्रन्थ,चौबीस अवतार(पहली सैंची),लखनऊ:भुवन वाणी ट्रस्ट, पृष्ठ-370
[14]. सिंह,महीप, ,(2002) भारतीय साहित्य के निर्माता:गुरु गोबिंद सिंह, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृष्ठ--57
[15]. पन्नू ,हरपाल सिंह,(2019),पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक, बठिंडा:पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी,पृष्ठ -17
[16]. सिंह, साहिब,(2021) जीवन वृतांत: श्री गुरु गोबिंद सिंह जी,अमृतसर: सिंह ब्रदर्स, पृष्ठ- 63
[17]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ-277
[18]. पंजाबी दुनिया (जनवरी-अप्रैल-2017), भाषा-विभाग-पंजाब, पृष्ठ-247,248
[19]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ-282
[20]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ-284
[21]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ 122
[22]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ -286
[23]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ -107
[24]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ -292
[25]. भूषण,भारत, (प्रथम संस्करण-1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन. पृष्ठ -282

Cite this Article

*डॉ. नरेश कुमार, डॉ. प्रीति सिंह, **"भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का प्रदेय"**, International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 1, pp. 35-44, January 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i1.107*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.